1013
ज्योतिष

रामलपुरा सरकार — हे. वेन्द्र कुमार तिवारी नागर
School/शाला
1 Roll/रोल नं. In Words/शब्दों में

Class/कक्षा 10 Sec/वर्ग Sub/विषय ज्योतिष Set/सेट
Date/दिनांक Day/दिन Room No./कमरा नं.
No.of Supplementary/सप्ली पृष्ठ की संख्या Mark Obtained/प्राप्तांक
विषयकोड- 1013 Out of M.M./पूर्णांक
Sing. Invigilator/ह. पर्यवेक्षक Sing. Examiner/ह. परीक्षक page/पेज

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32

विवाह मुहूर्त विचार — विषय कोड 1013

उत्तरायणे सूर्य मीनं चैत्रं च परिवर्जयेत् ।
अज गो द्वन्द कुम्भालि मृगराशि गते रवौ ॥
मुख्यं करग्रहं त्वन्य राशि गे न कदाचन् ।
कन्या तुला मिथुन गे लग्ने च शुभ वासरे ॥

भावार्थ— उत्तरायण में मीन के सूर्य में चैत्र को छोड़कर वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़ फाल्गुन मार्गशीर्ष और माघ के मास क्रम से मेष वृष मिथुन कुंभ वृश्चिक और मकर के राशि के सूर्य वाले मास होने पर विवाह शुभ है

विवाह नक्षत्र

रोहिण्युत्तर रेवत्यो मूल स्वाती मृगो मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगल प्रदा ॥

भावार्थ- रोहिणी तीनों उत्तरा रेवती मूल
स्वाती मृगशिरा मघा अनुराधा और
हस्त ये नक्षत्र विवाह में शुभ है

विवाह मास

मिथुन कुंभ मृगालि वृषाजगे
मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचे
अलि मृगाजगते करपीडनं
भवति कार्तिक पौष मधुष्वपि

भावार्थ मिथुन कुंभ मकर वृश्चिक वृष और
मेष के सूर्य हो तो विवाह करना शुभ है
मिथुन के सूर्य आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी
पर्यन्त श्रेष्ठ है। वृश्चिक के सूर्य हों तो कार्तिक में
मकर के सूर्य हों तो पौष मेष के सूर्य हो तो
चैत्र में भी विवाह शुभ है

विवाह शुद्धि

दश वर्ष व्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धि विवर्जिता।
तस्यास्तारेन्दु लग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मत:॥
द्वादशाब्द परे कन्या षोडशाब्द परो वरे।
तस्मै वैवाहिके सूर्ये गोचरे न दोष भाक्॥

दश वर्ष के बाद कन्या शुद्धि रहित होती है अतः लग्न शुद्धि तारा शुद्धि चन्द्र शुद्धि देखकर कन्यादान करना चाहिये। 16 वर्ष से अधिक उम्र वाले वर को 12 वाँ 4 वा 8 वा सूर्य हो तो 12 वर्ष के ऊपर की कन्या को 4. 8. 12 वां गुरु हो तो दोष नहीं होता।

वाग्दान मुहूर्त

विवाहोदित भे पूर्वा धनिष्ठा कृत्तिका भे
कुमारी वरणो कार्यं वरणं च शुभेऽहनि

भावार्थ - विवाह में कहे गये रोहिणी तीनो उत्तरा रेवती आदि नक्षत्रों में शुभ दिन दोपहर वर कन्या का वाग्दान करना शुभ है।

विवाह दश दोष

लत्ता पातो युति वेधो यामित्रं बुध पंचकम् ।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्ति साम्यं ततः परम् ॥
दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषा महाबला ॥

भावार्थ लत्ता पात युति वेध बुध पंचक एकार्गल उपग्रह क्रान्ति साम्य और दग्धा तिथि ये दश बड़े दोष बलिष्ठ है।

गुरु बल

गुरु बल
आद्ये द्वादशो वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ ।
पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राण नाशक: ॥

01. जून-2013

एकादशो द्वितीये वा पंचमे सप्तमेपि वा ।
नवमे च सुराचार्य कन्यायाः शुभ कारकः ॥

भावार्थ- विवाह में कन्या को अपनी राशि से
4. 08. 12. गुरु हो तो प्राण नाश करता है

विवाह में कन्या को स्वयं की राशि से 11. 2. 5. 7. 9
वा गुरु हो तो शुभ फल देता है।

सूर्य बल

एकादशो तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥
अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥

भावार्थ- विवाह में वर को स्वयं की राशि से
11. 03. 06. 10 सूर्य हो तो शुभ है
विवाह में वर को स्वयं की राशि से 4. 08. 12
सूर्य हो तो निःसंदेह वर की मृत्यु होती है

चन्द्र बल

अर्केन्दुश्च वरे क्षीण कन्यायां न कदाचन ।
वरस्य शुभदो नित्यं कन्यका पति नाशनः

स्त्रीणां गुरु बलम् श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम् ।
तयोश्चन्द्र बलं श्रेष्ठं इति गर्गेण भाषितम् ॥

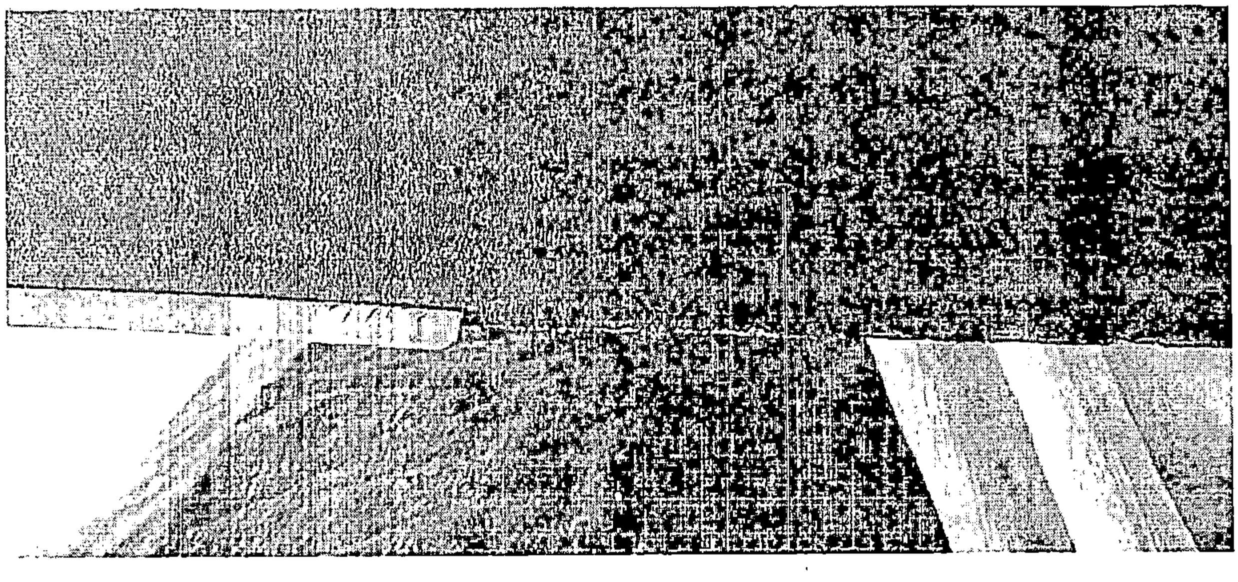

05 श्लोक - 1013

भावार्थ - स्त्रियों को गुरु का बल पुरुषों को सूर्य का बल दोनों को चन्द्र का बल होना जरूरी है।

विवाहे भौम दोष

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकृत्॥

भावार्थ - यदि कन्या को 1, 4, 7, 8, 12 भावों मे मंगल हो तो वह स्वामी का नाश करती है यदि पुरुष की इन स्थानों मे मंगल हो तो कन्या का नाश होता है।

मृत्युषडाष्टक

मेष कन्यक योरेवं तुला मीनकयोस्तथा।
युग्म माल्योस्तु कुर्चा स्यो मृत्यु र्नक्र सिंहयो:॥
कुंभ कर्क योश्चैव धनको दण्ड योस्तथा॥

भावार्थ - मेष और कन्या का तुला और मीन का मिथुन और वृश्चिक का मकर और सिंह का कर्क और कुंभ का तथा वृषभ और धनु का मृत्युषडाष्टक होता है।

06 मई-2013

प्रीतिषडाष्टक
सिंहो मीन सुतेऽश्वो च तुला वृष सुतारतथा।
चापं कर्कि सुते चैव कुंभ कन्याकं सोटतेऽपि

भावार्थ- सिंह और मीन का कुम्भ और
तुला कर्क और धनु कन्या और कुंभ
मिथुन और मकर मेष और वृश्चिक
इन राशियों का प्रीतिषडाष्टक होता है

वधू प्रवेश मुहूर्त

हस्त त्रये ब्रह्मयुगे मघायां
पुष्ये धनिष्ठा श्रवणो त्तरेषु
मूलानुराधा हस्त रेवतीषु
स्थिरेषु लग्नेषु वधू प्रवेशः

भावार्थ - हस्त चित्रा स्वाति रोहिणी मार्गशीर्ष
मघा पुष्य धनिष्ठा श्रवण तीनो उत्तरा
मूल अनुराधा अश्विनी और रेवती
इन नक्षत्रों में वधू प्रवेश शुभ है

विवाह लग्न विचार एवं शुक्रदोष परिहार

एक ग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे।
विवाहे तीर्थ यात्रायां प्रति शुक्रो न विद्यते।।

२७ | कोड- 1013

एक ही गांव अथवा शहर में दुष्काल में
राज्य क्रान्ति के वक्त विवाह तथा वधू प्रवेश
आदि कार्यो में तथा तीर्थ यात्रा में शुक्र सम्मुख
अथवा दक्षिण में हो तो दोष नहीं लगता

विवाहे लग्न विचार

व्यये त्या लग्ने व्यये मन्दे षष्ठे शुक्रेन्दु लग्नपा:
रन्ध्रे चन्द्रादय पंच सर्वे नेष्टा ग्रहा स्मृता

भावार्थ- विवाह की लग्न कुण्डली में पहले
और बारहवें स्थान में शनि हो तो छठे स्थान
में शुक्र चन्द्र और लग्न का स्वामी हो तो
तथा आठवें स्थान में चन्द्र आदि पांच
ग्रह हो तो अशुभ समझना चाहिये।

द्विरागमन मुहूर्त

चरेद्‌ ओजहायने घटालि मेषगे रवौ
रवीज्य शुद्धि योगत: शुभ ग्रहस्य वासरे
नृ युग्म मीन कन्यका तुला वृषे विलग्नके
द्विरागमन लघु ध्रुवे चरे ऽ शुभे मृदर्भ

भावार्थ - विषम वर्ष में वैशाख मार्गशीर्ष और
फाल्गुन इन मासों में सूर्य तथा गुरु शुद्धि
हो तो सोम बुध शुक्रवार में द्विरागमन शुभ है।

48 कोड - 1013

द्विरागमन मुहूर्त

आदित्य हस्तेन्दु मृगार्कि मैत्रे
तुरगा अश्विनी स्वाति वात पित्र्ये
वस्वाश्रुतीषु गमनं प्रशस्तं
च शोभिनौ चलतनो प्रहृष्टौ
त्रि शुद्धो

भावार्थ - पुनर्वसु हस्त रेवती मृगशिरा
मृगशिरा अश्विनी अनुराधा धनिष्ठा
स्वाति मघा इन नक्षत्रों में वधू को
द्विरागमन करना शुभ है

गांधर्व विवाह

इन्द्र स्वाति दिति श्लेषा
आग्नेय वरुणास्तथा ।
अश्विनी वसु दैवत्यं
पहुगाले शुभ स्मृतं ।

ज्येष्ठा आर्द्रा पुनर्वसु आश्लेषा कृत्तिका
शतभिषा अश्विनी धनिष्ठा इन नक्षत्रों में
गान्धर्व विवाह शुभ है ब्रह्म विवाह
शुभ नक्षत्र तिथि वार लग्न एवं माता पिता सहित
करते विवाह ब्रह्म विवाह कहते हैं ।

०9 08-2013

विवाहादौ कन्यारजो दोष

विवाहे वितते यज्ञे संस्कारे च कृते सदा।
कन्या ऋतुमती दृष्ट्वा कथं कुर्वन्ति याज्ञिकाः।
स्नापयित्वा तु तां कन्यां अर्चयित्वा यथाविधि।
युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः कर्म प्रवर्तते॥

विवाह अथवा यज्ञ आदि के शुभ समय प्राप्त हो उस समय कन्या को रजोदर्शन हो तो क्या करना चाहिये।

रजोवती कन्या को स्नान कराकर यथा विधि पूजन करके युञ्जान के मंत्र से होम करके बाकी कर्म करना चाहिये।

विवाहे नाम राशि प्रधानता

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नाम राशेः प्रधानत्वं जन्म राशिं न चिन्तयेत्॥
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नाम राशिं न चिन्तयेत्॥

भावार्थ- विवाह में शुभ कार्यों में यात्रा में गोचर में जन्म राशि से विचार करना चाहिये।